❍ 28 / 10 / 22 की मुरली से चार्ट ❍
⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∬ 1 ∬ होमवर्क (Marks: 5∗4=20)

➢➢ ∗कोई भी बुरा कर्म करके छिपाया तो नहीं ?∗

➢➢ ∗बाप से रूठे तो नहीं ?∗

➢➢ ∗संगमयुग की हर घड़ी को उत्सव के रूप में मनाया ?∗

➢➢ ∗सर्व शक्तियों के खजाने से संपन्न रहे ?∗

────────────────────────

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

☆ ∗अव्यक्त पालना का रिटर्न∗ ☆

❂ ∗तपस्वी जीवन∗ ❂

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

〰✧ कर्मातीत स्थिति को पाने के लिए विशेष स्वयं में समेटने की शक्ति, समाने की शक्ति धारण करना आवश्यक है। ∗कर्मबन्धनी आत्माएं जहाँ हैं वहाँ ही कार्य कर सकती हैं और कर्मातीत आत्मायें एक ही समय पर चारों ओर अपना सेवा का पार्ट बजा सकती हैं क्योंकि कर्मातीत हैं। उनकी स्पीड बहुत तीव्र होती है, सेकण्ड में जहाँ चाहे वहाँ पहुँच सकती हैं, तो इस अनुभूति को बढ़ाओ।∗

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

∬ 2 ∬ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

➢➢ *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

———————————————

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆

❂ *श्रेष्ठ स्वमान* ❂

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

✺ *"मैं राजऋषि हूँ"*

〰✧ सदा अपने को 'राजऋषि' समझते हो? *एक तरफ है राज्य, दूसरे तरफ है वैराग - दोनों का बैलेन्स हो। बेहद का वैराग, वैराग नहीं लेकिन प्राप्तिस्वरूप बना देता है क्योंकि पुरानी दुनिया से वैराग लाते हो और नई दुनिया के मालिक बन जाते हो।*

〰✧ तो नाम वैराग है लेकिन मिलती प्राप्ति है। छोड़ने में ही लेना है। एक देते हो और पदम् लेते हो! *तो बेहद का वैराग राज्य भाग्य दिलाने वाला है। एक जन्म के लिए वैराग अनेक जन्मों के लिए सदा श्रेष्ठ भाग्य।* ऐसे राजऋषि हो?

〰✧ *राजऋषि कुमार और कुमारियों का ही गायन है। ऐसी राजऋषि आत्माओंको विश्व की आत्मायें दिल से प्यार करती है। चैतन्य से भी ज्यादा आपके जड़ चित्रों को प्यार से याद करते हैं। क्योंकि त्याग का भाग्य प्राप्त हुआ है। तो ऐसे राजऋषि आत्मायें हैं - इस नशे में सदा रहो।*

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

∬ 3 ∬ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

———————————————

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

〰✧ आवाज में आना सहज लगात है ना। ऐसे ही आवाज से परे होना इतना ही सहज लगता है? आवाज में आना सहज है वा आवाज से परे होना सहज है? *आवाज में आना सहज है और आवाज से परे होने में मेहनत लगती है?* वैसे आप आत्माओं का आदि स्वरूप क्या है? आवाज से परे रहना या आवाज में आना?

〰✧ तो अभी मुश्किल क्यों लगता है? 63 जन्मों ने आदि संस्कार भूला दिया है। *जब अनादि स्थान 'परमधाम' आवाज से परे है,* वहाँ आवाज नहीं है और आदि स्वरूप आत्मा में भी आवाज नहीं है - *तो फिर आवाज से परे होना मुश्किल क्यों?*

〰✧ यह मध्य-काल का उल्टा प्रभाव कितना पक्का हो गया है। ब्राह्मण जीवन अर्थात जैसे आवाज में आना सहज वैसे आवाज से परे हो जाना - यह भी अभ्यास सहज हो जाये। *इसकी विधि है - राजा होकर के चलना और कर्मेन्द्रियों को चलाना।*

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

∬ 4 ∬ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

———————————————

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

〰✧ मीठे बच्चे, अपने चलन और चेहरे से फ़रिश्ते स्वरूप को प्रत्यक्ष करो ! बापदादा नवीनता देखने चाहते हैं। सब अच्छे हो, विशेष भी हो, महान भी हो लेकिन *बाप की प्रत्यक्षता का आधार है- साधारण कार्य में रहते हुए भी फ़रिश्ते की चाल और हाल हो।* बापदादा यह नहीं देखने चाहते कि बात ऐसी थी, काम ऐसा था, सरकमस्टांश ऐसे थे, समस्या ऐसी थी, इसीलिए साधारणता आ गई।

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

∫∫ 5 ∫∫ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

———————————————

∫∫ 6 ∫∫ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- भोलानाथ बाप, एक से, झोली को ज्ञान रत्नों से भरना"*

➳ ➳ एक खबसरत झरने को निहारती हुई में आत्मा... सोचती

हूँ...ऊंचाइयों से गिरता हुआ पानी... किस कदर धवल बन चमक रहा है... और यही जादूगरी मेरे जीवन में भी छा गयी है कि... *ईश्वर पिता ने आकर जो मुझ आत्मा को देह के दायरों से बाहर निकाल... अशरीरी अवस्था की ऊंचाइयों पर बिठाया... मै आत्मा निर्मल बन, गुणो की धवलता को पा गयी.*.. मेरा हर कार्य ईश्वरीय खूबसूरती से सजने लगा है... झरनो के सौंदर्य को निहारती हुई मै आत्मा... स्वयं के अंतर्मन में ईश्वर पिता द्वारा सजाये हुए... *गुणो और शक्तियो के भीतर बहते झरने में... स्वयं के उज्ज्वल धवल अद्वितीय सौंदर्य को देख मन्त्र मुग्ध हो रही हूँ.*..

❉ *मीठे बाबा ने मुझ आत्मा को ज्ञान रत्नों से लबालब कर, विश्व का मालिक बनाते हुए कहा :-* "मीठे प्यारे फूल बच्चे... सत्य की तलाश में, दर दर की ठोकरे खाते रहे, फिर भी कोसो दूर ही रहे... *आज भगवान स्वयं धरा पर उतर कर, स्वयं से मिलवा रहा... और अपनी सारी मिल्कियत, जागीर से भरपूर कर रहा है.*.. ऐसे प्यारे पिता को पाकर, सदा मीठी यादो में डूब जाओ... अपने खुबसूरत शानदार भाग्य के मीठे मीठे गीत गाओ..."

➳ _ ➳ *मै आत्मा मीठे बाबा की सारी दौलत को दिल में समेटते हुए कहती हूँ :-* "मीठे मीठे बाबा मेरे... मै आत्मा जनमो तक सच्चे सुखो और सत्य से महरूम रही... ईश्वर को पाने की चाहत में धरती आसमाँ नापती रही... पर प्यारे बाबा, आपकी एक झलक भी न पा सकी... *जब आपने आकर मुझे पुकारा, अपनी बाँहों में समाया, तो ही मै ईश्वर को जान सकी.*.. मीठे बाबा अब तो हर साँस में आप समाये हो...

❉ *प्यारे बाबा ने मुझ आत्मा को अपनी सारी खानों और खजानो को मुझे सौंपते हुए कहा :-* "मीठे प्यारे लाडले बच्चे... ईश्वर को पा लिया, सारी सृस्टि के बीज को जान लिया... तो अब व्यर्थ बातो में भटकना नही है... सदा एक बाप की प्रीत में डूबे हुए, ज्ञान रत्नों से झोली को भरते रहो... *मीठे बाबा की बाँहों में रहकर, सदा ज्ञान मणियो से सजे रहो... संगम की यादो भरे, यह बेशकीमती पल यूँ ही अब व्यर्थ में जाया न करो.*.."

➳ ➳ *मै आत्मा प्यारे बाबा की यादो में गहरे डुबकर अपने भाग्य पर

नाज करते हुए कहती हूँ :-* "मीठे मीठे बाबा मेरे... आपने मुझे मेरे सच्चे वजूद का अहसास कराकर... जीवन कितना प्यारा, और खुशियो से भरा, सुनहरा कर दिया है... ईश्वर पिता को पाने की चमक, सहज ही मेरे रंग रूप से झलकती है... *मेरे श्रीमत की खुबसूरत राहो पर रखे हुए, कदमो की आहट को...पूरा विश्व दीवाना होकर, सुन रहा है... और मीठे बाबा से, बिछड़ा हुआ, हर दिल पुनः मिल रहा है.*.."

❉ *मीठे बाबा ने मुझ आत्मा को अपनी अखूट सम्पत्ति देकर, असीम खुशियो सजाते हुए कहा :-* "मीठे प्यारे सिकीलधे बच्चे... भोलानाथ पिता को पाकर, सब कुछ पा लिया है... *यह कितना प्यारा भाग्य है कि भगवान बाँहों में समा गया है... सारे दुखो से, भटकन से छुड़ाकर, सुखो से सजी और खुशियो से महकी नई खुबसूरत दुनिया का मालिक बना रहा है..*. ऐसे प्यारे बाबा की यादो में रोम रोम से खो जाओ... जो दिव्यता और पवित्रता से संवार कर देवताई श्रंगार कर रहा है..."

➳ _ ➳ *मै आत्मा मीठे बाबा के सच्चे प्यार में गहरे डूबकर कहती हूँ :-* "मीठे मीठे प्यारे बाबा मेरे... मै आत्मा मन्दिरो में, कन्दराओं में आपके दीदारो को भटकती रही... और आपने स्वयं आकर, मुझे अपनी गोद में बिठा लिया... और *सच्चे ज्ञान से मुझे रौशन कर दिया है... मै आत्मा आपके प्यारे तले,अज्ञान अंधेरो से निकल कर, सदा के लिए नूरानी हो गयी हूँ..*प्यारे बाबा को अपनी भावनाये अर्पित कर.मै आत्मा... इस कर्मक्षेत्र पर लौट आयी...

∫∫ 7 ∫∫ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- अपने कर्मबन्धनों को स्वयं काटना है*"

➳ ➳ कर्मो की गहन्य गति का ज्ञान अपने प्यारे मीठे बाबा से पाकर

जीवन को जीना कितना सहज लगने लगा है। *मन ही मन अपने आप से बातें करती अपने प्यारे बाबा का मैं धन्यवाद करती हूँ और विचार करती हूँ कि जब तक कर्मो की गुह्य गति के बारे में नही जाना था तो कर्मबन्धन के रूप में आने वाली परिस्थितयां जीवन को कितना हल - चल में ले आती थी*। यही विचार करते - करते एक दृश्य मुझे दिखाई देता है। मैं देख रही हूँ कि अनेक प्रकार की जंजीरो में मैं कैद हूँ। उन जंजीरों से छूटने की हर सम्भव कोशिश कर रही हूँ। लेकिन मेरे अंदर इतना बल नही कि उन जंजीरो को मैं काट सकूँ।

➳ _ ➳ स्वयं को मैं एकदम असहाय अनुभव करके बहुत ही दुःखी हो रही हूँ। तभी जैसे आकाशवाणी होती है कि ये जंजीरे ऐसे नही टूटेंगी। इन जंजीरो को तोड़ने का केवल एक ही उपाय है और वो है परम पिता परमात्मा की याद। *केवल परमात्म बल ही इन जंजीरो को काट सकता है और इनके बन्धन से मुझे मुक्ति दिला सकता है*। इस आकाशवाणी को सुन कर मैं जैसे ही अपने परम पिता परमात्मा को सच्चे दिल से याद करती हूँ। मैं अनुभव करती हूँ सूर्य के समान अति तेजोमय एक ज्योतिपुंज ऊपर आकाश से उतर कर मेरी ओर आ रहा है।

➳ _ ➳ उस प्रकाशपुंज से अनन्त किरणे निकल रही है और वो प्रकाशपुंज मेरे बिल्कुल नजदीक आ कर जैसे ही अपनी उन किरणों को मुझ पर प्रवाहित करता है, उन किरणों की शक्ति से एक - एक करके सभी जंजीरे टूटने लगती है। *सभी जंजीरों के टूटते ही मुझे ऐसा अनुभव हो रहा है जैसे सभी बन्धनों से मैं बिल्कुल मुक्त हो गई हूँ*। स्वयं को बन्धन मुक्त अनुभव करते ही वो दृश्य मेरी आँखों से ओझल हो जाता है।

➳ _ ➳ उस दृश्य को स्मृति में ला कर अब मैं विचार करती हूँ कि वास्तव में ये जंजीरे कोई स्थूल जंजीरे नही थी *ये तो मेरे ही द्वारा अनेक जन्मो के किये हुए कर्मो का फल था जिसने कर्मबन्धन की जंजीरो के रूप में मुझे बांध रखा था*। और इन कर्मबन्धनों रूपी जंजीरो के लिए मैं दूसरों को दोषी मान कर इन्हें और ज़्यादा मजबूत बना रही थी।

➳ ➳ धन्यवाद मेरे मीठे प्यारे बाबा का जिन्होंने आ कर मुझे कर्मो की

इस फिलॉसफी के बारे में सब कुछ विस्तार से समझा दिया। और अब जबकि मैं यह सत्यता जान चुकी हूँ कि मेरे जीवन मे सुख - दुख के रूप में आने वाली सभी परिस्थितियां मेरे ही द्वारा किये हुए कर्मो का अच्छा या बुरा फल है। *तो अब अपने जीवन मे घटने वाली हर परिस्थिति को अपने ही किये हुए कर्म का फल मान, उस कर्मबन्धन को अपने भगवान बाप की याद से, योग बल से मुझे स्वयं ही काटना है*। स्वयं से यह प्रोमिस कर, अपने अंदर योगबल जमा करने के लिए, अब मैं अशरीरी स्थिति में स्थित हो कर बैठती हूँ और अपने निराकार स्वरूप में स्थित हो कर अपने स्वीट साइलेन्स होम परमधाम की ओर चल पड़ती हूँ।

➳ _ ➳ साकारी और सूक्ष्म लोक से परे आत्माओं की निराकारी दुनिया परमधाम में अब मैं स्वयं को अपने योगेश्वर शिव पिता परमात्मा के सम्मुख देख रही हूं। *बुद्धि का योग अपने योगेश्वर बाबा के साथ लगा कर उनसे आ रही सर्वशक्तियों को मैं स्वयं में समा रही हूँ*। परमधाम में बीज रूप स्थिति में स्थित हो कर अपने बीज रूप परमपिता परमात्मा के साथ योग लगाकर, योग की अग्नि में तपकर मेरा स्वरूप सच्चे सोने के समान अति तेजस्वी और शक्तिशाली बन गया है। *बाबा की लाइट माइट से भरपूर हो कर डबल लाइट बन कर अब मैं वापिस लौट रही हूँ*

➳ _ ➳ अपनी साकारी देह में विराजमान हो कर अब मैं निरन्तर आत्मिक स्मृति में रहते हुए अपने पिता परमात्मा की याद में सदा समाई रहती हूँ। *योग का बल स्वयं में जमा कर, अपने जीवन मे आने वाली परिस्थितयों या बीमारी आदि के रूप में आने वाले हर प्रकार के कर्मबन्धन को स्वयं काटकर उस परिस्थिति पर अब मैं सहज ही विजय प्राप्त कर रही हूँ*।

∫∫ 8 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं संगमयग की हर घडी को उत्सव के रूप में मनाने वाली आत्मा हूँ।*

✺ *मैं उमंग उत्साह सम्पन्न आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

———————————————

∫∫ 9 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं आत्मा सदा सर्व शक्तियों के खजाने से सम्पन्न रहती हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा ब्राह्मण स्वरूप की विशेषता को धारण करती हूँ ।*
✺ *मैं संगमयुगी ब्राह्मण आत्मा हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

———————————————

∫∫ 10 ∫∫ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ *संगमयुग पर ब्रह्माकुमार वा ब्रह्माकुमारी अकेले नहीं हो सकते। इसलिए सिर्फ जब सेवा में, कर्मयोग में बहुत बिजी हो जाते हो ना तो साथ भी भूल जाते हो और फिर थक जाते हो।* फिर कहते हो थक गये, अभी क्या करें! *थको नहीं, जब बापदादा आपको सदा साथ देने के लिए आये हैं, परमधाम छोड़कर क्यों आये हैं? सोते, जागते, कर्म करते, सेवा करते, साथ देने के लिए ही तो आये हैं।* ब्रह्मा बाप भी आप सबको सहयोग देने के लिए अव्यक्त बनें। व्यक्त रूप से अव्यक्त रूप में सहयोग देने की रफ़्तार बहुत तीव्र है, इसलिए ब्रह्मा बाप ने भी अपना वतन चेंज कर दिया। तो *शिव बाप और ब्रह्मा बाप

दोनों हर समय आप सबको सहयोग देने के लिए सदा हाजिर हैं। आपने सोचा बाबा और सहयोग अनुभव करेंगे।* अगर सेवा, सेवा, सेवा सिर्फ वही याद है, बाप को किनारे बैठ देखने के लिए अलग कर देते हो, तो बाप भी साक्षी होकर देखते हैं, देखें कहाँ तक अकेले करते हैं। फिर भी आने तो यहाँ ही हैं। *तो साथ नहीं छोड़ो। अपने अधिकार और प्रेम की सूक्ष्म रस्सी से बांधकर रखो। ढीला छोड़ देते हो। स्नेह को ढीला कर देते हो, अधिकार को थोड़ा सा स्मृति से किनारा कर देते हो। तो ऐसे नहीं करना।*

➳ _ ➳ *जब सर्वशक्तिवान साथ का आफर कर रहा है तो ऐसी आफर सारे कल्प में मिलेगी? नहीं मिलेगी ना?* तो बापदादा भी साक्षी होकर देखते हैं, अच्छा देखें कहाँ तक अकेले करते हैं! *तो संगमयुग के सुख और सुहेजों को इमर्ज रखो। बुद्धि बिजी रहती है ना तो बिजी होने के कारण स्मृति मर्ज हो जाती है।* आप सोचो सारे दिन में किसी से भी पूछें कि बाप याद रहता है या बाप की याद भूलती है? तो क्या कहेंगे? नहीं। यह तो राइट है कि याद रहता है लेकिन इमर्ज रूप में रहता है या मर्ज रहता है? स्थिति क्या होती है? इमर्ज रूप की स्थिति या मर्ज रूप की स्थिति, इसमें क्या अन्तर है? इमर्ज रूप में याद क्यों नहीं रखते? *इमर्ज रूप का नशा शक्ति, सहयोग, सफलता बहुत बड़ी है। याद तो भूल नहीं सकते क्योंकि एक जन्म का नाता नहीं है, लेकिन प्रिंसिपल चाहे शिव बाप सतयुग में साथ नहीं होगा लेकिन नाता तो यही रहेगा ना ! भूल नहीं सकता* है, यह राइट है। हाँ कोई विघ्न के वश हो जाते हो तो भूल भी जाता है लेकिन वैसे जब नेचरल रूप में रहते हो तो भूलता नहीं है लेकिन मर्ज रहता है। *इसलिए बापदादा कहते हैं - बार-बार चेक करो कि साथ का अनुभव मर्ज रूप में है या इमर्ज रूप में?* प्यार तो है ही। प्यार टूट सकता है? नहीं टूट सकता है ना? । *तो प्यार जब टूट नहीं सकता तो प्यार का फायदा तो उठाओ। फायदा उठाने का तरीका सीखो।*

✺ *ड्रिल :- "सर्वशक्तिवान के साथ का इमर्ज रूप में अनुभव"*

➳ _ ➳ *मैं संगमयुगी ब्रह्मकुमारी... ब्रह्मा मुखवंशावली... श्रेष्ठ आत्मा हूँ... बाबा ने कहा है संगमयुग पर... ब्रह्माकुमार वा ब्रह्माकुमारी अकेले नहीं है... बापदादा ने हमेशा साथ देने का वादा किया है...* लेकिन बच्चे ही बापदादा के

साथ को भूल जाते हैं... *जब सेवा में... कर्मयोग में बहुत बिजी हो जाते है... तो साथ को भूल जाते... फिर थक जाते है... बच्चे थकते ही तब हैं... जब साथ का अनुभव नहीं करते हैं...* जब बाबा को साथ लेकर नहीं चलते हैं... फिर कहते हैं... बाबा अब क्या करें... तो बाबा ने कहा है... *बच्चे थको नहीं... बच्चे बाबा तो आए ही हैं... आपको सदा साथ देने के लिए... अपना परमधाम छोड़कर...* मैं आत्मा बाबा की इस बात को अब हमेशा याद रखती हूं... और हर पल बाबा के साथ रहती हूँ... *कैसी भी सेवा हो... बिना विघ्न और थकावट के पूर्ण करती हूँ...*

➳ _ ➳ *मैं आत्मा सोते... जागते... कर्म करते... सेवा करते... बाबा के साथ को हमेशा यूज करती हूं...*क्योंकि मुझे पता चल गया है... बाबा साथ देने के लिए ही तो आये हैं... *ब्रह्मा बाप भी मुझ आत्मा को... सहयोग देने के लिए ही अव्यक्त बनें...* ब्रह्मा बाबा के व्यक्त रूप से अव्यक्त रूप में सहयोग देने की रफ़्तार बहुत तीव्र है... *अव्यक्त रूप में सेवा ज्यादा देने के लिए ही... ब्रह्मा बाप ने भी अपना वतन चेंज किया है...* अब तो मुझ आत्मा को... *शिव बाप और ब्रह्मा बाप दोनों हर समय... सहयोग देने के लिए सदा हाजिर है... जब भी मैं आत्मा सोचती हूँ.... बाबा मेरे साथी मेरे पास आ जाओ तो... बाबा मेरे सामने हाजिर - नाजिर होते जाते हैं... मैं आत्मा बाबा के सहयोग और साथ का अनुभव करने लगती हूँ...* कभी - कभी मुझ आत्मा को सेवा... और सिर्फ सेवा ही याद रहती है... मैं आत्मा बाबा को किनारे कर देती हूँ... बाप भी किनारे बैठ कर... देखते रहते हैं और मुस्कुराते रहते हैं... की बच्ची किस तरह मेहनत कर रही है... ये सब कुछ बाबा साक्षी होकर... दूर बैठे देखते रहते हैं कि... बच्चे कहाँ तक अकेले करते... बाबा भी जानते हैं कि अंत में थक हार के... आना मेरे पास ही हैं... *इसलिए मैं आत्मा अब... हर छोटे से छोटे कार्य में पहले बाबा को रखती हूँ... मैं आत्मा तो सिर्फ निमित्त मात्र हूँ... करनहार तो मेरे सर्व शक्तिमान बाबा हैं...*

➳ _ ➳ *वाह मैं आत्मा कितनी धन्य हूँ... जिसके साथ के लिए तपस्वी इतनी कठिन तपस्या करते हैं... वो सर्वशक्तिवान परम पिता स्वयं मुझे साथ का आफर कर रहे हैं... ऐसी आफर सारे कल्प में... सिर्फ संगमयुग पर ही मिलती है...* संगमयग में बाप के साथ के... ऐसे आनंदमय सखों को सहेज

कर... मैं आत्मा इमर्ज रूप में... हमेशा सामने रखती हूँ... मैं आत्मा अपनी बुद्धि को कभी भी बिजी नहीं रखती हूं... *बुद्धि बिजी होना माना बापदादा की... स्मृति मर्ज होना है...* मैं आत्मा स्वयं चेक करती हूँ कि... मुझ आत्मा को बाबा की याद... इमर्ज रूप में रहती है या मर्ज रूप में रहती है... *अगर याद मर्ज रूप में होगी तो... याद में मिलावट होगी... जिससे बाप के साथ और शक्तियों का अनुभव नहीं होगा...* बाबा ने कहा है... *इमर्ज रूप का नशा... शक्ति... सहयोग... और... सफलता दिलाता है...* मुझ आत्मा को... बाबा की याद कभी भूल नहीं सकती है... क्योंकि *बाबा से मेरा एक जन्म का नाता नहीं है... मेरा और उनका नाता तो कल्प - कल्प का है... चाहे शिव बाप सतयुग में साथ नहीं होंगे... लेकिन मेरा और उनका नाता तो हमेशा रहेगा...*

➳ _ ➳ *मैं आत्मा स्वयं को निमित्त समझ कर... सारे बोझ करनहार बाबा पे छोड़ के... निश्चिंत हो जाती हूँ...* अब मैं आत्मा कभी भी... अपने सर्व शक्तिमान शिव बाबा का साथ नहीं छोड़ती हूँ... *मैं आत्मा शक्तिमान शिव बाबा की संतान हूँ... इस अधिकार और प्रेम की... सूक्ष्म रस्सी से हमेशा बाबा को बांधकर रखती हूं...* इस प्रेम की डोर को... मैं आत्मा स्नेह की इस डोर को कभी ढीला नहीं होने देती हूँ... क्योंकि मैं आत्मा जान चुकी हूँ... *स्नेह के सागर मेरे शिव बाबा... इस डोर में बंधे हुए दौड़े चले आते हैं... बाबा ने कहा भी है कि... बच्चे बुलाए और बाप ना आए... ऐसा हो नहीं सकता है...* मैं आत्मा सर्व शक्तिमान की संतान हूँ... अपने इस अधिकार को हमेशा स्मृति में रखती हूँ... अपने परम पिता से अब कभी भी किनारा नहीं करती हूँ...

➳ _ ➳ मुझ आत्मा का बाबा से मेरा ये नाता... कभी भूल नहीं सकता... लेकिन कभी - कभी... मैं आत्मा किसी विघ्न के वश हो जाती हूँ... तो याद भूलती नहीं है लेकिन मर्ज रूप में रहती है... *इसलिए बापदादा के कहे अनुसार... मैं आत्मा बार-बार चेक करती हूँ कि... बाबा का साथ और शक्तियों का अनुभव मर्ज रूप में है... या इमर्ज रूप में... सर्व शक्तिमान बाप से मेरा प्यार अटूट है... और मैं आत्मा इस प्यार का फायदा.... हमेशा लेती हूँ...*

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔